24

''वह बड़ा दिन ... आ गया''

(6:12-17)

एक किसान था, जिसका नाम मान लेते हैं कि रॉबर्ट था। रॉबर्ट एक मसीही व्यक्ति था और वह प्रभु से प्रेम करता था। प्रभु की कलीसिया जब भी इकट्ठी होती तो वह वहां होता था। बुआई का समय होने पर वह आराधना में जाता था। बादल छाए होने और उसके खेतों को खतरा होने पर वह वहां जाता था। कटनी का समय होने पर भी और जब फसल इकट्ठी करने का समय होता था तब भी वह परमेश्वर के लोगों के साथ आराधना में होता था। रॉबर्ट के इस समर्पण से उसके एक पड़ोसी को, जो अविश्वासी था, चिढ़ थी, इस कारण उस पड़ोसी ने प्रयोग के लिए एक खेत अलग कर लिया। वह रॉबर्ट के आराधना में गए होने के समय केवल उसी खेत में काम करता था। कटनी के बाद रॉबर्ट के पड़ोसी ने उसे बुलाया। धन का ढेर मेज़ पर लगाते हुए उसने कहा, ''पता है कि यह कहां से आया? यह उस खेत की उपज है, जिसमें मैंने उस समय काम किया, जब तू परमेश्वर के सामने प्रार्थना करने में समय बर्बाद कर रहा था। उस खेत में दूसरे किसी भी खेत से 30 प्रतिशत उपज अधिक हुई है! अब बता तेरा क्या कहना है?'' रॉबर्ट ने उस धन को देखा और उत्तर दिया, ''मेरा कहना है कि परमेश्वर सारे हिसाब कटनी के समय ही बराबर नहीं कर देता।''

हमारा पिछला अध्ययन पांचवीं मुहर और शहीदों की पुकार पर केंद्रित था कि ''हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:10)। हमने निष्कर्ष निकाला था कि परमेश्वर के कहने का अर्थ था कि ''हिसाब बराबर'' करने का अभी समय नहीं है, परन्तु एक दिन वह ऐसा *करेगा।* हमने यह भी संकेत दिया था कि परमेश्वर के प्रतीक्षा करने का एक कारण दोषियों को मन फिराने का एक अवसर देना था।

उसके विपरीत वचन का हमारा अगला भाग हमें बताता है कि परमेश्वर के धीरज की सीमाएं हैं। स्पष्टतया एक समय आता है, जब परमेश्वर कहता है, ''बस इसके आगे और नहीं!'' ऐसा होने पर जैसे इब्रानियों के लेखक ने कहा है, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। प्रकाशितवाक्य 6:12-17 बताता है कि यह

कितना खतरनाक है:

> और जब उसने छठवीं मुहर खोली, तो मैंने देखा कि एक बड़ा भुईंडोल हुआ; और सूर्य कम्बल की नाईं काला[1], और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। और आकाश के तारे पृथ्वी पर ऐसे गिर पड़े[2] जैसे बड़ी आंधी से हिलकर अंजीर के पेड़ में से कच्चे फल झड़ते हैं।[3] और आकाश ऐसा सरक गया, जैसा पत्र लपेटने से सरक जाता है;[4] और हर एक पहाड़, और टापू,[5] अपने-अपने स्थान से टल गया। और पृथ्वी के राजा, और प्रधान और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतन्त्र, पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे। और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे, कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने के प्रकोप से छिपा लो। क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, अब कौन ठहर सकता है ?

एक लेखक ने इस दृश्य की इस प्रकार कल्पना की है :

> अचानक संसार में उथल-पुथल मच जाती है। भूकम्प आने से पूरा संसार थरथरा जाता है; कोई रिएक्टर पैमाना उसकी प्रचंडता को माप नहीं सकता। सूर्य को पूरी तरह ग्रहण लग गया है। वास्तव में यूहन्ना बताता है कि ''सूर्य कम्बल की नाईं काला, और पूरा चन्द्रमा लोहू का सा हो गया। और आकाश के तारे पृथ्वी पर गिर पड़े ...'' (प्रकाशितवाक्य 6:12, 13)।
>
> संसार भय से कांप रहा है। बड़े-बड़े नगर ध्वस्त हो गए हैं। यूहन्ना राजाओं, राजकुमार, सेनापतियों; धनवानों, सामर्थी लोगों दासों और स्वन्तत्र सब को अन्तिम न्याय के परमेश्वर के भय से बचने के लिए पृथ्वी पर भागते देखता है। वे पहाड़ों की गुफाओं की ओर भागते हैं। वे चट्टानों और पहाड़ों में छिपते हैं। पर बचाव कहीं नहीं है।[6]

प्रकाशितवाक्य 6:12-17 पढ़ते समय आपके मन में क्या-क्या बातें आती हैं। मेरे मन में आने वाले कई शब्द अंग्रेजी के अक्षर "T" से शुरू होते हैं, जिसमें "terror" (आतंक) और "terrible" (खतरनाक), "terrifying" (भयभीत करने वाला) और "terrified" (भयभीत), "tormenting" (सताने वाला) और "tormented" (सताया हुआ), "trembling" (थरथराता हुआ) और "traumatic"(सदमा पहुंचाने वाला) हैं। इस पूरे पद्य से आप पर क्या प्रभाव पड़ता है ? कुल मिलाकर मुझ पर पड़ने वाला प्रभाव है कि ''यह सब होने पर मैं वहां नहीं होना चाहता!''

टीकाकार इस बहस में उलझ जाते हैं कि यह परमेश्वर के शत्रुओं को दिए जाने वाले अस्थायी दण्ड की बात है[7] या यह समय के अन्त में होने वाले संसार के अन्तिम विनाश का संकेत है। हम इस मुद्दे पर बात करेंगे, परन्तु इस प्रश्न का सीमित महत्व है। क्लेबर्न, टैक्सस में रहते समय हम देखते थे कि बसंत ऋतु में तूफ़ानों से बड़ा विनाश होता था: पेड़ उखड़ जाते थे; बोर्ड और बाड़ें टूट जाती थीं; घरों और दुकानों को नुकसान होता था।[8] तूफ़ान के

बाद स्थानीय समाचार पत्र में घोषणा होती कि कोई बवंडर नीचे नहीं आया; हमें केवल बवंडर जैसी आंधी का अनुभव ही हुआ था। मेरा जवाब होता था ''इससे क्या फर्क पड़ने वाला है ?'' जिसका घर टूट जाए, उसे इससे क्या फर्क पड़ता है कि यह बवंडर से टूटा या बवंडर जैसी लगने वाली आंधी से ? वैसे ही परमेश्वर का क्रोध तो परमेश्वर का क्रोध ही है, चाहे यह अब हो या मसीह के आने पर–और यकीन जानें कि आप इसे अनुभव करना *नहीं* चाहेंगे !

दिन का विवरण (6:12-17)

12 से 17 आयतें स्वाभाविक तौर पर दो भागों में बंट जाती हैं: संसार के टुकड़ों में उड़ने का चित्र (आयतें 12–14) और फिर भयभीत मनुष्यों का चित्रण (आयतें 15–17)। (क्रोध का बड़ा दिन वाला का चित्र देख।) पहले हम संसार के विनाश को देखेंगे।

विनाश का एक दिन (आयतें 12–14)

मुझे याद है कि पहली बार मैंने 6:12–14 कब सुना था। मेरी उम्र उस समय 10–11 वर्ष की थी और हम रॉकी, ओक्लाहोमा में रहते थे। मेरे एक सहपाठी ने बताया था कि उसने एक प्रचारक को यह कहते सुना है कि संसार उस दिन खत्म होने वाला है, अर्थात सूरज काला हो जाएगा, चांद लहू बन जाएगा और तारे टूटकर पृथ्वी पर गिर पड़ेंगे। उसके मुझे यह बताने के बाद, मैं आकाश की ओर देखते हुए मैदान में लेट गया और कल्पना करने की कोशिश करने लगा कि सूर्य के काला होने और चांद के लहू बन जाने पर कैसा लगेगा। कुछ समय बाद मैं उकता गया और फिर से खेलने लगा, जैसे लड़के करते ही हैं। मेरे साथ अगले दिन यह हुआ कि संसार वैसे खत्म नहीं हुआ, जैसे उस प्रचारक ने भविष्यवाणी की थी।[9]

क्या 12 से 14 आयतें संसार के अन्त का मूल विवरण हैं ? सम्भवतया नहीं, बेशक बाइबल इस बात पर ज़ोर देती है कि यह वर्तमान संसार प्रभु के आने पर नष्ट हो जाएगा:

> ... प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे। ... आकाश आग से पिघल जाएंगे, और आकाश के गण बहुत ही तप्त होकर गल जाएंगे (2 पतरस 3:10–12)।

निश्चय ही प्रकाशितवाक्य 6:12–14 का अधिकतर रूपक संसार के विनाश की बाइबल की शिक्षा से मेल खाता है[10] परन्तु प्रकाशितवाक्य 6 की कुछ बातों को अक्षरश: नहीं लिया जा सकता। उदारहण के लिए क्या तारे पृथ्वी पर टूट कर गिरेंगे ? तारे पृथ्वी से कई गुणा बड़े हैं। इस कारण वे ''पृथ्वी पर '' गिर नहीं सकते।

यदि 12 से 14 आयतें संसार के अन्त की कल्पना करने के लिए दी गई थीं तो पवित्र आत्मा ने ऐसी सचित्र भाषा के लिए यूहन्ना को क्यों इस्तेमाल किया। यूहन्ना ने अपने

पाठकों के लिए परिचित संकेतों का अर्थात पूरी बाइबल में पाए जाने वाले संकेतों का इस्तेमाल किया, जिनसे यह घोषणा हुई कि परमेश्वर लोगों के जीवनों में हस्तक्षेप कर रहा था (या हस्तक्षेप करेगा)!

इस पाठ में पुराने नियम के शब्दों के मेल का इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए यहेजकेल 38:19 तथा अन्य पदों में आपको भूकम्प के संकेत मिल जाएंगे।[11] पृथ्वी कांपने को उसे हिलाने के लिए संकेत माना जाता था। यह ऐसे लोगों का भ्रम दूर करने के लिए था जो सोचते थे कि उन्हें हिलाया नहीं जा सकता। हम *terra firma* अर्थात ''ठोस भूमि'' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। जब हमारे कदमों के नीचे की ''ठोस भूमि'' हिलती है तो हम भयभीत हो जाते हैं। अपोकलिप्टिक लेखकों ने भूकम्पों का इस्तेमाल उसके मिटाए जाने के संकेत के लिए किया, जिस पर लोग निर्भर करते हैं। आज हम ''भूकम्प'' शब्द का इस्तेमाल मनुष्य जाति को प्रभावित करने वाली क्षणिक घटनाओं के लिए करते हैं।

वचन में और आकृतियों का इस्तेमाल पुराने नियम में होता था, और उनका संदेश भी ऐसा ही था: योएल ने सूर्य के काला होने और चांद के लहू बनने की बात की (योएल 2:31),[12] और यशायाह ने आकाश के तारों के हटाए जाने और आकाश के ''लपेटे'' जाने की बात की (यशायाह 34:4)। यिर्मयाह ने पहाड़ों के डोलने के रूपक का इस्तेमाल किया (यिर्मयाह 4:24),[13] जबकि यहेजकेल ने टापुओं के विनाश के बारे में लिखा (यहेजकेल 27:35)।[14] यूहन्ना ने भयभीत करने वाली हर चीज़ का ढेर लगाया, जिसकी कल्पना उसके समय के लोग परमेश्वर का विरोध करने वालों पर आने वाले आतंक की तस्वीर के लिए कर सकते थे![15]

12 से 14 आयतों की शब्दावली पर चर्चा करते हुए जॉन बोमैन ने शब्दों की खेदजनक पसंद चुनी (मेरे विचार से)। उसने लिखा, ''इन वैश्विक घटनाओं को उनके ही कारण गम्भीरता से नहीं लिया जाना चाहिए।''[16] मैं कहूंगा, ''दृश्य को *अक्षरश:* लेने की नहीं, बल्कि *गम्भीरता से* लेने की आवश्यकता है।'' इससे गलातियों 6:7 की शेष सच्चाई स्पष्ट हो जाती है: ''... परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा''!

निराशा भरा दिन (आयतें 15, 16)

अगली आयत में हम वैश्विक विनाश से इसके प्रभाव में जाते हैं: ''और पृथ्वी के राजा, और प्रधान, और सरदार, और धनवान और सामर्थी लोग, और हर एक दास, और हर एक स्वतन्त्र, पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे''[17] (आयत 15)।

आयत 15 में बताए सात वर्ग के लोगों में मनुष्य जाति का हर वर्ग आ जाता है[18] (विशेषकर वे, जिन्होंने परमेश्वर की इच्छा का विरोध किया)। यूहन्ना के समय लोगों के मन में ''पृथ्वी के राजा'' पढ़ने पर सम्राट डोमिशियन और उसकी इच्छा से और उसके अधीन राजाओं का विचार आया होगा। ''सरदार'' शब्द शक्तिशाली लोगों की ओर संकेत है, जो राजनैतिक हाकिम नहीं थे।[19] CEV में दिलचस्प शब्द पृथ्वी के ''प्रसिद्ध लोग'' है।

यूनानी शब्द का अनुवाद ''सरदार हज़ार लोगों के सेनापति'' के लिए बहुवचन है। पीटरसन ने इसके लिए ''सेनापतियों'' शब्द का इस्तेमाल किया है।[20]

''धनवान'' शब्द अपनी व्याख्या खुद करता है। ''सामर्थी लोग'' शारीरिक रूप से शक्तिशाली लोगों को नहीं, बल्कि देश में ज़बर्दस्त प्रभाव वाले लोगों को कहा गया है। उदाहरण के लिए अमेरिका में इस वर्ग में प्रसिद्ध मनोरंजन करने वाले और खिलाड़ी हो सकते हैं।[21] इस प्रकार यूहन्ना ने राजनैतिक अगुओं, सैनिक अगुओं और सामाजिक नेताओं की बात की। डी.टी.नाइल्स ने कहा है:

> ... पदवी किसी काम की नहीं थी। पृथ्वी के राजा तक सुरक्षित नहीं थे। धनवानों के धन से रक्षा नहीं होती थी, सामर्थी लोगों की सामर्थ से शांति नहीं मिलती थी। ... जीवन के सभी आधार बिखर गए थे और लोग डर के मारे अपने आप को छिपाते थे। ... हर पोशाक से वंचित और जीवन की हर प्राप्ति के छिन जाने से वे परमेश्वर के सामने खड़े होने से डरते थे।[22]

''हर एक दास और हर एक स्वतन्त्र'' का नाम सूची में सबसे अन्त में आता है। ''स्वतन्त्र'' पहले दास था, जिसे स्वतन्त्रता मिली थी, परन्तु जो अभी भी मुश्किल से गुजारा करता था। दास और स्वतन्त्र दोनों को उस समय की सामाजिक सीढ़ी में सबसे निचले पायदान पर रखा गया था और आमतौर पर अन्य पांच वर्गों के लोगों का उनके साथ कोई सम्बन्ध नहीं होता था, परन्तु परमेश्वर के क्रोध के सामने सामाजिक अन्तर भुला दिए गए थे। अनुग्रह करते समय परमेश्वर ''पक्षपात'' नहीं करता और न ही वह अपना क्रोध दिखाते समय पक्षपात करता है। (देखें प्रेरितों 10:34; रोमियों 2:9-11.)

बड़े से लेकर छोटे सब डरकर छिपने की कोशिश करने लगे। परमेश्वर के भय के कारण लोग छिपने की कोशिश ही करते हैं। आदम और हव्वा ने परमेश्वर से छिपने की कोशिश की थी (उत्पत्ति 3:8)। परमेश्वर की आज्ञा न मानने पर योना नबी ने परमेश्वर की उपस्थिति से बचने की कोशिश की थी (योना 1:3)। दोनों ने पाया कि परमेश्वर से छिपना सम्भव नहीं है (भजन संहिता 139:7-12)। आज भी दोषी लोग छिपने की कोशिश करते हैं। यूहन्ना द्वारा दिए गए लोग ''पहाड़ों की खोहों में, और चट्टानों में जा छिपे और पहाड़ों, और चट्टानों से कहने लगे कि हम पर गिर पड़ो; और हमें उसके मुंह से जो सिंहासन पर बैठा है, और मेमने के प्रकोप से छिपा लो'' (आयतें 15, 16)।[23]

''पापियों को सबसे अधिक भय मृत्यु से नहीं, बल्कि परमेश्वर की उपस्थिति में जाने से लगता है।''[24] अज्ञानता में छिपने वाले लोगों को यह पता नहीं था कि मृत्यु उन्हें इतनी जल्दी परमेश्वर की उपस्थिति में ला खड़ा करेगी (20:12)!

आयत 16 के वाक्यांश ''हमें ... मेमने के प्रकोप से छिपा लो''[25] को व्याख्या की आवश्यकता है। *मेमने* का प्रकोप? आक्रमण न करने की वकालत के लिए मेमने का पोस्टर लगाना सबसे सही पसंद होगी। भोले-भाले शरारती मेमने के जान-बूझकर किसी को कष्ट पहुंचाने की कल्पना कौन कर सकता है? मान लो कि आप देहात में जा रहे हैं और

रास्ते में आपको अपनी चतुराई के कारण पत्थर के पीछे छिपा सहमा हुआ एक व्यक्ति मिलता है। आप पूछते हैं ''क्या हुआ?'' कांपती हुई आवाज़ में वह उत्तर देता है, ''एक मेमना मेरे पीछे पड़ा है!'' ऑस्ट्रेलियाई व्यक्ति कहता है कि वह आदमी ''क्रेकर्स'' था।[26] समाचार पत्र उठाने पर आपको उसमें यह सुर्खी मिले, ''मेमने के आक्रमण के कारण आदमी अस्पताल में'' तो आप शायद यह देखने लगेंगे कि समाचार पत्र पहली अप्रैल का तो नहीं है।[27]

फिर ''मेमने के क्रोध'' वाक्यांश में कुछ कंपा देने वाली बात है।[28] किसी मेमने के हम पर क्रुद्ध होने की बात किसी पालतू पशु द्वारा आक्रमण करने या प्रिय बालक के हमारे विरुद्ध होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसका बेमेल होना उन लोगों के पाप की शत्रुता पर ज़ोर देता है जो परमेश्वर से छिपने का प्रयास कर रहे हैं। वह पाप, जिसने मेमने को भी क्रोधित कर दिया, कितना भयंकर होगा!

संसार के नाश होने और अविश्वासियों की निराशा को देखकर हमें उन शहीदों की पुकार का कि ''हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और ... हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' (6:10) प्रभु की ओर से उत्तर मिल जाता है। प्रभु ने उनके सताने वालों को मन फिराने का बहुत समय देना था, इतना समय जिससे वे अपने ढंग बदल लेते। परन्तु अन्त में उसने न्याय करना था यानी अन्त में उसने बदला लेना था। अन्त में परमेश्वर ''भस्म करने वाली आग'' (इब्रानियों 12:29) होगा!

दिन की चर्चा (6:17)

एक प्रश्न जिसका बहुत कम महत्व है: कब?

अध्ययन जारी रखते हुए मैंने उन आवाज़ों का बढ़ता शोर सुना है, जो यह जानने *पर ज़ोर* देती हैं कि ''यह परमेश्वर द्वारा रोमी साम्राज्य को नष्ट करने की बात है या युग के अन्त में संसार के विनाश की बात?'' टीकाकार इस प्रश्न पर बंटे ही हुए हैं।[29]

6:12-17 की बातों का अर्थ परमेश्वर द्वारा रोमी साम्राज्य को उखाड़ फेंकना हो *सकता* है। पहले दिए गए हवालों में जब पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भूकम्पो, सूर्य के अन्धियारा हो जाने, चांद के लहू बन जाने और तारों के गिरने की बात की गई तो लेखक आमतौर पर परमेश्वर का विरोध करने वाले देशों, बाबुल, अश्शूर तथा अन्यों को दिए जाने वाले अस्थायी दण्ड की भविष्यवाणी करते थे। यूहन्ना के पाठकों को याद दिलाया जाना था कि कालांतर में परमेश्वर ने अजेय लगने वाली जातियों को नष्ट किया था। उसी प्रकार परमेश्वर को रोम का नाश करने में कोई आपत्ति नहीं होनी थी।

निश्चय ही रोमी साम्राज्य की हार प्रत्यक्ष, व्यक्तिगत और शहीदों की पुकार के स्पष्ट उत्तर में होनी थी: ''हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न करेगा? और पृथ्वी के लोगों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा?'' रोमी सरकार ने मसीही लोगों का लहू बहाया था, इस कारण यह पक्का है कि ईश्वरीय न्याय की मांग थी कि रोमी सरकार को

दण्ड दिया जाए। इसके सम्बन्ध में प्रकाशितवाक्य के 17 से 19 अध्याय पढ़ें। बड़े बाबुल (अर्थात रोम[30]) के विनाश के चित्रण के बाद स्वर्ग में एक बहुत बड़ी भीड़ 19:1ख, 2 के इन शब्दों से प्रभु की महिमा गा रही थी: ''हल्लिलूय्याह उद्धार, और महिमा, और सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है। क्योंकि ... उसने उस बड़ी वेश्या का ... न्याय किया, *और* उससे *अपने दासों के लोहू का पलटा लिया है*।'' कइयों का मानना है कि ये आयतें 6:10 की विनती से सीधे जुड़ती हैं और हो सकता है कि वे सही हों।[31]

दूसरी ओर यह भी हो सकता है कि 6:12-17 ''क्रोध के बड़े'' *अन्तिम* ''दिन'' की बात हो। यह सिखाने वाले लोग ये प्रमाण देते हैं: (1) पुराने नियम के किसी पद में इस वचन की तरह विनाश की *सभी* आकृतियों को जोड़ा नहीं गया है। (2) रूपक के कुछ पहलू हमें संसार के अन्त में होने वाली घटनाओं का ध्यान दिलाते हैं। इनमें सब मनुष्यों के इकट्ठा होने (2 कुरिन्थियों 5:10) और पिता और पुत्र को विश्वव्यापी रूप में स्वीकार करने (फिलिप्पियों 2:11) की बात है। (3) मेमने का उल्लेख इस दृश्य को विलक्षण बना देता है। पुराने नियम के पदों में मसीह को शामिल नहीं किया गया था।

आरम्भ के पाठ ''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए!''[32] में प्रकाशितवाक्य के सात भागों की रूपरेखा थी, जिसमें हर भाग पूरे मसीही काल अर्थात ''मसीह के प्रथम से द्वितीय आगमन तक'' फैला हुआ है।[33] 6:12-17 का दृश्य निश्चय ही 1:7 में पहले दिए विवरण ''देखो, वह बादलों के साथ आने वाला है; और हर एक आंख उसे देखेगी, ... *और पृथ्वी के सारे कुल उसके कारण छाती पीटेंगे।* ...''[34] इस कारण मेरा झुकाव इस विचार की ओर है कि 6:12-17 में क्रोध के अन्तिम दिन की बात है।

फिर भी मुझे नहीं लगता कि इससे बहुत बड़ा फर्क पड़ता है। यदि यह पद्य मुख्यतया रोमी साम्राज्य के विनाश के विषय में है तो यह उस बड़े अन्तिम दिन का पूर्वाभास और *किसी* के लिए भी जो परमेश्वर के विरुद्ध खड़ा होने का प्रयास करता है, चेतावनी है। यदि यह उस बड़े अन्तिम दिन की बात है तो यह इस बात को सिखाता है कि परमेश्वर का विरोध करने वाला *कोई भी* चाहे वह रोमी साम्राज्य ही हो, अन्त में उसके क्रोध का स्वाद चखेगा।

यह प्रश्न कि यह पद्य अस्थायी दण्ड की बात करता है या अनन्त दण्ड की बात इतनी महत्वपूर्ण नहीं है। इस पद्य का जोर इस बात पर है कि क्रोध का एक बड़ा दिन आ रहा *है*। बाबुल के लोगों के लिए क्रोध का एक दिन था, अश्शूर के लोगों के लिए क्रोध का एक दिन था, रोमियों के लिए क्रोध का एक दिन था और आज के सब लोगों के लिए जो परमेश्वर के प्रेम को नज़रअंदाज़ करते हैं, क्रोध का एक दिन होगा (रोमियों 2:5; इफिसियों 5:6)!

यदि हमें जीवन का कोई अर्थ बनाना है तो हमारे लिए इस बड़े अन्त को देखना आवश्यक है। मनुष्य का इतिहास न खत्म होने वाला चक्र अर्थात व्यर्थ में अपने आप को दोहराते रहना नहीं है। इसके बजाय इतिहास ''ठहराए हुए लक्ष्य वाली एक यात्रा'' है।[35] बीतने वाले हर दिन के बाद हम संसार के अन्त अर्थात अनन्तकाल जिसे स्वर्ग या नरक कहते हैं, के और निकट आते जा रहे हैं! प्रकाशितवाक्य 6:12-17 जैसे पद्य इस बात की

घोषणा करते हैं कि दुष्टों की विजय थोड़ी देर की है[36] और न्याय का होना निश्चित है![37] परमेश्वर अपने क्रोध को अपने ही उद्देश्यों के लिए थोड़ी देर के लिए टाल सकता है, परन्तु क्रोध का दिन आ रहा है और हर किसी को उसके लिए तैयार होना आवश्यक है!

प्रश्न जिसका महत्व बहुत है: कौन? (आयत 17)

प्रश्न जिसका महत्व है, वह आयत 17 में मिलता है: ''क्योंकि उनके प्रकोप का भयानक दिन आ पहुंचा है, *अब कौन ठहर सकता है*? ''

9 से 11 आयतों में और 15 से 17 आयतों में दिखाए गए कई अन्तर हमें मिलते हैं। एक अन्तर यह है कि (वास्तव में) शहीदों ने पुकारा था, ''हमारा बदला लो!'' जबकि तैयार न होने वाले लोगों ने पुकारा था, ''हमें छिपा लो!'' एक और अन्तर यह है कि लोगों को परमेश्वर से कष्ट ने नहीं, बल्कि पाप ने अलग किया था। सबसे चौंकाने वाला अन्तर शायद यह प्रश्न है कि हर समूह ने पूछा, यानी शहीद जानना चाहते थे कि ''कब तक?'' और भयभीत लोग पुकार रहे थे कि ''कौन ठहर सकता है?''

''कौन ठहर सकता है?'' प्रश्न पहले पूछा गया था। नहूम ने लिखा था, ''उसके क्रोध का सामना कौन कर सकता है? और जब उसका क्रोध भड़कता है, तब कौन ठहर सकता है? उसकी जलजलाहट आग की नाईं भड़क जाती है, और चट्टानें उसकी शक्ति से फट-फट कर गिरती हैं'' (नहूम 1:6)। मलाकी ने भी पूछा था, ''उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे, तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सुनार की आग ... के समान है'' (मलाकी 3:2)। एज्रा ने प्रार्थना करते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया था, ''हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! ... देख, हम तेरे सामने दोषी हैं, इस कारण कोई तेरे सामने खड़ा नहीं रह सकता'' (एज्रा 9:15)। परमेश्वर के सामने *कोई नहीं* ठहर सकता यानी *कोई भी* जो तैयार नहीं है।

एडवर्ड माइर्स ने टिप्पणी की है, '' 'कौन ठहर सकता है?' उन लोगों की, जिन्होंने परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह के सुसमाचार को ठुकरा दिया है, निराशा को दिखाता है। यह एक खतरनाक प्रश्न चिह्न है, जो किसी भी अभक्ति-पूर्ण जीवन के अर्थ को छीन लेता है।''[38]

अगले दो पाठों में हम अध्याय 7 का अध्ययन करेंगे जिसमें परमेश्वर का भय मानने वालों के लिए परमेश्वर की संभाल और प्रतिफल की बात मिलती है। आयत 9 में हम ''एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था ... सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी '' देखते हैं। शहीदों द्वारा यह पुकारने के समय कि ''कब तक'' सताने वाले खड़े थे, जबकि सताए जाने वालों की लाशें गलियों में पड़ी थीं। तौ भी अन्त में परमेश्वर के लोग ही खड़े होंगे, जबकि दुष्ट लोग परमेश्वर के क्रोध से घिर जाएंगे!

सारांश

भाई विल थांपसन ने कई साल पहले ''देअर'स ए ग्रेट डे कमिंग'' शीर्षक से एक गीत लिखा था। आज भी यह गीत मुझे प्रभावित करता है (उसका अनुवाद इस प्रकार है):

बड़ा दिन आ रहा है,
एक बड़ा दिन आ रहा है,
एक बड़ा दिन निकट आ रहा है;
जब पवित्र लोगों को दाहिने और पापियों को बाएं
अलग किया जाएगा,
क्या आप उस दिन के आने के लिए तैयार हैं ?

चमकदार दिन आ रहा है,
एक चमकदार दिन आ रहा है,
एक चमकदार दिन निकट आ रहा है;
पर इसकी चमक केवल उन पर पड़ेगी
जो प्रभु से प्रेम करते हैं,
क्या आप उस दिन के आने के लिए तैयार हैं ?

उदास दिन आ रहा है,
एक उदास दिन आ रहा है,
एक उदास दिन निकट आ रहा है;
जब पापी को उसका भविष्य बताया जाएगा,
''दूर हो जा, मुझे मालूम है तू तैयार नहीं है,''
क्या आप उस दिन के आने के लिए तैयार हैं ?[39]

प्रभु के आने पर आपके लिए यह ''बड़ा दिन,'' ''चमकदार दिन'' होगा या फिर ''उदास दिन''? क्या आप उस दिन के आने के लिए तैयार हैं ? यदि आप अभी भी अपने पापों में हैं तो आप तैयार नहीं हैं। हाल ही में ग्लैन पेस ने ये बातें कही थीं:

पाप आपको उससे दूर ले जाएगा, जहां आप जाना चाहते हैं।
पाप आपको उससे अधिक समय रखेगा, जितना आप ठहरना चाहते हैं।
पाप की कीमत आपको अधिक देनी पड़ेगी, जितनी आप देने को तैयार हैं।
पाप आपको उससे अधिक हानि पहुंचाएगा, जिसकी आप कल्पना कर सकते हैं।[40]

जब लोग परमेश्वर के क्रोध से छिपने की कोशिश करते हैं तो इस संसार की चट्टानें उन्हें छिपा नहीं सकतीं। परमेश्वर के क्रोध से रक्षा केवल युगों की चट्टान, यीशु मसीह ही करता है।[41] यीशु ही ''हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है'' (1 थिस्सलुनीकियों 1:10)। क्या आपने अपना जीवन उसे दे दिया है ? क्या आपने अपनी इच्छा उसे सौंप दी है ? यदि नहीं तो आज ही उस पर भरोसा रखकर उसकी आज्ञा मानें![42]

सिखाने वालों और प्रचारकों के लिए नोट्स

पिछले पाठ में एक सरल रेखाचित्र का इस्तेमाल किया गया था:

इस संसार में

इस पाठ के सम्बन्ध में वह रेखाचित्र दोहराया जा सकता है:

अगले संसार में

इस पाठ के अन्य सम्भावित शीर्षक ''मेमने का क्रोध,'' ''आप परमेश्वर से छिप नहीं सकते!'' और ''कौन खड़ा रह सकता है?'' हो सकते हैं।

पांच और छह मुहरों को एक ही प्रस्तुति में बताना हो तो आप अपने पाठ का शीर्षक ''सही ढंग और गलत ढंग'' रख सकते हैं। पांचवीं मुहर को ''सताव पर प्रतिक्रिया जताने का सही ढंग'': (1) सताव पर चिंतित होना सही है। (2) सताव आने पर परमेश्वर से *मुड़ने* के बजाय परमेश्वर *की ओर* मुड़ें। (3) खुद बदला न लें, बल्कि ऐसे मामलों को परमेश्वर के हाथ में सौंप दें। छठी मुहर को ''न्याय के लिए तैयारी का गलत ढंग'' दिखाया जा सकता है: (1) न्याय आने से पहले कुछ न करें। (2) सोचें कि जीवन में आपका स्थान आपको परमेश्वर के क्रोध के लिए अभेद्य बना देता है। (3) न्याय के आने पर एक गड्ढा खोदकर उसमें रेंगें।

अध्याय 6 को एक ही पाठ में बताना हो, तो मैरिल सी.टैनी की रूपरेखा:

(1) इतिहास के चाबुक (पहली से चौथी मुहरें), (2) पवित्र लोगों का कष्ट (पांचवीं मुहर), (3) आकाशों का कांपना (छठी मुहर) सही है।[43]

अध्याय 6 के लिए एक और दिलचस्प ढंग ''समस्या पर परमेश्वर का सात-नुकाती प्रवचन'' होगा। सम्भावित नुक्ते या प्वाइंट्स हैं: (1) समस्या-इससे बचा नहीं जा सकता! (पहली मुहर); (2) समस्या आपका दिल तोड़ सकती है (दूसरी मुहर); (3) समस्या आपका मन दुखी कर सकती है (तीसरी मुहर); (4) समस्या आपका प्राण ले सकती है (चौथी मुहर); (5) समस्या (विश्वासी के लिए) दोहरी खुराक ला सकती है (पांचवीं मुहर); (6) केवल अविश्वासी पर आने वाली समस्या ही परेशान करती है (छठी मुहर); (7) परमेश्वर आज की समस्याओं को सहने में आपकी सहायता करता है और समस्या रहित कल का वायदा देता है! (अध्याय 7)। अध्याय 6 के साथ इस ढंग का इस्तेमाल करने पर पाठक की भूख बढ़ाने के लिए अध्याय 7 में केवल सातवां प्वाइंट ही देना पड़ेगा। यह प्रवचन दो भागों में हो सकता है, जिसमें पहले चार प्वाइंट्स सुबह और अन्तिम तीन प्वाइंट्स शाम को बताए जा सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]कम्बल एक खुरदरा कपड़ा था, जिसे मुख्यतया थैलियां बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था, परन्तु शोक के समय पहनने वाले वस्त्र बनाने के लिए भी इसका इस्तेमाल होता था। यह काला कम्बल विशेषकर काली बकरियों के बालों से बनता था। [2]कुछ लोगों का मानना है कि तारों का गिरना महत्वपूर्ण व्यक्तियों के गिरने को कहा गया है। पुराने नियम में कई बार बड़े लोगों को तारे कहा गया है। परन्तु प्रकाशितवाक्य 6 में तारों के गिरने का रूपक पूरी तस्वीर का भाग ही है और सम्भवतया इसका महत्व इससे अधिक नहीं है। [3]ये अंजीरें ऐसी थीं ''जो शरद ऋतु में होती हैं, तो भी पकती नहीं, परन्तु बसंत आने तक झड़ जाती हैं'' (होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979], 198)। इस पर चर्चा करते हुए तेज़ आंधी आने से आपके इलाके में झड़ जाने वाले पेड़ों का उदाहरण दें। मेरे बग़ीचे में तेज़ आंधी चलने से सूखी टहनियां और अनानास की पत्तियां झड़ जाती हैं। [4]पत्री क्योंकि लपेट कर रखी जाती है, इसलिए इसे खुला रखने के लिए खींच कर पकड़े रखना आवश्यक है। यदि खुला रखने से सूखा, भुरभुरा हस्तलेख टूट जाए, तो किनारे इकट्ठे हो जाएंगे। इस कारण आकाश को अलग किए हुए और इकट्ठा होते दिखाया जाता है। यूजीन एच.पीटरसन ने अपनी व्याख्या में ऐसी आकृति का इस्तेमाल किया, जिससे अधिकतर पाठक परिचित थे: ''आकाश की तस्वीर बन्द किताब की तरह ली गई'' (*द मैसेज: न्यू टैस्टामेंट विद सॉम्स एंड प्रोवर्ब्स* [कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: नव प्रैस पब्लिशिंग ग्रुप, 1995], 618)। ज़ोर से किताब बन्द करते हुए आप इस उदाहरण का इस्तेमाल विज़ुअल के रूप में कर सकते हैं। [5]पहाड़ों और टापुओं का आपस में गहरा रिश्ता है: टापू समुद्र के बाहर उससे सटा हुआ पहाड़ ही तो है। इस संदर्भ में, ''टापू'' शब्द का इस्तेमाल सम्भवतया यह ज़ोर देने के लिए किया गया है कि पृथ्वी का कोई भी भाग भूकम्प से बचेगा नहीं: टापुओं को माना जाता था कि वे पृथ्वी के दुर्गम स्थान हैं। [6]बिली ग्राहम, *अप्रोचिंग हूफ़बीट्स: द फ़ोर हॉर्समैन ऑफ़ द अपोकलिप्स* (न्यू यार्क: एवन बुक्स, 1985), 241. [7]अन्य शब्दों में कुछ लोगों का मानना है कि यह रोमी साम्राज्य को मिलने वाले दण्ड की बात है। [8]छह वर्ष के बाद मेरी पत्नी और मुझे खिड़की का शीशा, दरवाज़े की और टूटने वाली चीज़ें और दो छतें बदलनी पड़ीं। [9]जब भी आप किसी को मसीह के वापस आने

के सही-सही समय की भविष्यवाणी करते सुनें, तो आपको पता चल सकता है कि वह झूठा नबी है (मत्ती 24:36-44)। [10]हमें मालूम है कि सब कुछ क्रियाशील अणुओं से बना है और इन अणुओं को अलग उड़ने के लिए बनाया जा सकता है, इसलिए प्रकाशितवाक्य 6:12-14 की भाषा आज उतनी बनावटी नहीं लगती, जितनी पहले कभी लगती थी।

[11]देखें यिर्मयाह 4:24; योएल 2:10; आमोस 8:8; हाग्गै 2:6. [12]देखें यशायाह 13:10; 50:3; यहेजकेल 32:7; आमोस 8:9. [13]देखें नहूम 1:5. [14]देखें 26:15, 18; KJV [15]यह वाक्य विलियम बार्कले, *द रैवलेशन ऑफ़ जॉन,* अंक 2, संशो. संस्क. द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर, 1976), 15 से लिया गया। [16]जॉन विक बोमैन, *द फर्स्ट क्रिश्चियन ड्रामा: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1955), 53. [17]परमेश्वर से छिपने की कोशिश के लिए पहाड़ों और गुफ़ाओं में जाने का विचार होशै 10:8 और यशायाह 2:19 में इस्तेमाल किया गया था। यीशु ने यरूशलेम पर आने वाली समस्याओं के बारे में बोलते हुए इस रूपक से लिया था (लूका 23:30)। [18]सात अंक सम्पूर्णता का प्रतीक है। [19]मूल यूनानी में मिश्रित शब्द है, जिसका अर्थ मूलत: ''बड़े लोग'' या ''बड़े'' है। 18:23 में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ है, जहां इसे महत्वपूर्ण व्यापारियों के लिए इस्तेमाल किया गया है। कुछ अनुवादों में इसे ''राजकुमारों'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द बताया गया है। [20]पीटरसन, 618.

[21]संसार के जिस भाग में आप रहते हैं, वहां बहुत महत्व रखने वाले लोगों का उदाहरण दें। [22]डी.टी.नाइल्स, *एज़ सीइंग द इनविज़िबल ए स्टडी ऑफ़ द बुक रैवलेशन* (न्यू यॉर्क: हार्पर एंड ब्रदर्स, पब्लिशर्स, 1961), 60-61. [23]यदि आपने कभी डरे हुए जानवर को छिपने की कोशिश करते हुए देखा हो तो आप इन लोगों के अविवेकी कार्य को समझाने के लिए इसे उदारहण के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। मेरे ध्यान में उस अवसर का उदारहण आता है जब हमारी बिल्ली को मेरी बेटी डैब्बी के नये कुत्ते ने जो बहुत बड़ा और खूंखार था, डरा कर भगा दिया था। [24]हैनरी बी.स्वेट, *द अपोकलिप्स ऑफ़ सेंट जॉन* (कैंब्रिज: मैकमिलन, कं., 1908; रीप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी.ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 94. [25]कुछ लोगों को ''मेमने के प्रकोप'' वाक्यांश रास नहीं आता; उन्हें यह ध्यान दिलाना अच्छा लगता है कि इस पद्य में इस वाक्यांश का इस्तेमाल विश्वासियों ने नहीं, बल्कि अविश्वासियों ने किया है। परन्तु ''परमेश्वर का प्रकोप'' प्रकाशितवाक्य में भरा पड़ा है (14:10, 19; 15:1, 7; 16:1; 19:15; 11:18; 16:19 भी देंखें)। परमेश्वर का सिंहासन मेमने का सिंहासन भी है (22:3) यानी जो एक के लिए है, वही दूसरे के लिए कहा गया है। प्रकाशितवाक्य में आमतौर पर यीशु को दुष्टों को दण्ड देते दिखाया गया है (2:16, 22, 23; 17:14; 19:11-21)। मैं यह निष्कर्ष निकालता हूं कि ''मेमने का प्रकोप'' वाक्याशं शेष पुस्तक की बातों से मेल खाता है। [26]''क्रेकर्स'' एक ऑस्ट्रेलियन अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ ''क्रैक या पागल'' है। [27]पहली अप्रैल को ''मूर्ख दिवस'' के रूप में मनाया जाता है, जिसमें हास्य कार्यक्रम आदि करवाए जाते हैं। समाचार पत्रों में विशेष तौर पर अप्रैल 1 के अंक में शानदार काल्पनिक लेख दिए जाते हैं, जिनके अंत में ''एप्रिल फूल बनाया'' आदि लिखा होता है! [28]कुछ आधुनिक डरावनी कहानियों में गुड़िया, बच्चा या ऐसे अनापेक्षित विरोधी होते हैं। कहानियों में इन विरोधियों का सामान्य भोलापन इतना आक्रामक होता है कि वे बहुत ही भयानक लगते हैं। [29]इस वाक्य में हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले टीकाकार नहीं हैं। अपने इस विश्वास के कारण कि अध्याय 4 से 19 मुख्यतया पृथ्वी पर सात वर्ष के काल्पनिक ''क्लेश'' की बात करने वालों ने इस भाग की व्याख्या को उलझन भरा बना दिया है। [30]अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि वह वेश्या, बड़ा बाबुल, रोम ही था। बड़ा बाबुल ''वह बड़ा नगर है, जो पृथ्वी के राजाओं पर राज करता है'' (17:18), जो ''सात पहाड़ों'' पर है (17:9)। रोम आज भी सात पहाड़ियों पर बसा है।

[31]उन लोगों द्वारा, जो यह विश्वास रखते हैं कि वचन का हमारा पाठ विशेषकर और विशेष रूप से रोमी साम्राज्य के विनाश की बात करता है, और तर्क भी दिए जाते हैं। एक तर्क यह है कि ''यह समय के अन्त में संसार के विनाश की बात हो सकती है, क्योंकि यह विनाश 'पलक मारते ही' हो जाएगा (1 कुरिन्थियों 15:52)।'' क्योंकि यह एक प्रतीक है और प्रतीक में कुछ भी हो सकता है इस कारण यह तर्क इतना महत्वपूर्ण नहीं लगता। दिलचस्प बात यह है कि एक और तर्क है कि ''यह भाषा प्रतीकात्मक है न कि

अक्षरश:, इसलिए यह संसार के विनाश की बात नहीं हो सकती।'' यह तर्क दो धारी तलवार है, जो दोनों ओर से काटती है। यह पद्य या तो अस्थाई दण्ड देने का प्रतीक है या अन्तिम दण्ड का; यह बात कि यह पद्य सांकेतिक है, दोनों में से किसी भी सम्भावना को खत्म नहीं करती।[32]*ट्रुथ फ़ॉर टुडे* की पुस्तक ''प्रकाशितवाक्य,1'' में यह पाठ देखें। [33]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 25. [34]''प्रकाशितवाक्य,1'' पुस्तक में ''हे प्रभु, कब तक?'' पाठ में 1:7 पर नोट्स देखें। [35]ओवन एल. क्राउच, *एक्सपोज़िटरी प्रीचिंग एंड टीचिंग: रैवलेशन* (जोप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1985), 123. [36]देखें भजन संहिता 94:1-7, 21-23. [37]इब्रानियों 9:27. [38]एडवर्ड पी. मायर्स, *आफ्टर दीज़ थिंग्स आई सॉ, ए स्टडी ऑफ रैवलेशन* (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1997), 160. [39]विल एल. थाम्पसन, ''देअर'स ए ग्रेट डे कमिंग,'' *सौंग्स ऑफ़ द चर्च,* संपादन, आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977)। [40]भाई पेस 10 अगस्त 1997 की बुधवार शाम को जुडसोनिया चर्च ऑफ़ क्राइस्ट में बोल रहे थे।

[41]देखें 1 कुरिन्थियों 10:4; रोमियों 9:33 भी देखें; 1 पतरस 2:8. [42]इस पाठ का इस्तेमाल प्रवचन के रूप में करना हो तो मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16; गलातियों 3:26, 27 जैसी आयतों का इस्तेमाल करें। इसके अलावा यदि इसका इस्तेमाल प्रवचन के रूप में किया जाता है तो निष्कर्ष में इब्रानियों 12:25-29 भी जोड़ा जाए। इन आयतों में उन वस्तुओं की, जो हिलाई जा सकती हैं (अर्थात इस पृथ्वी की) उन वस्तुओं, जो हिलाई नहीं जा सकती (जैसे राज्य/कलीसिया) से तुलना की गई है। अपने सुनने वालों को परमेश्वर के राज्य के लोग (अन्य शब्दों में कलीसिया के सदस्य) बनने की आवश्यकता पर ज़ोर दें। [43]मैरिल सी. टैनी, *प्रोक्लेमिंग द न्यू टैस्टामेंट: द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1963), 33-35.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रकाशितवाक्य 6:12-17 पढ़ते हुए आपके मन में क्या-क्या बातें आती हैं? आप पर इस दर्शन का पहला प्रभाव क्या पड़ता है?
2. क्या इस पद्य में संसार के अन्त की विस्तृत अर्थात शब्दश: तस्वीर है? इस बात से कि हर विवरण शब्दश: नहीं हो सकता किसी के मन में क्या विचार आता है?
3. सूर्य के अन्धियारा होने और तारों के गिरने की बात करने वाली पुराने नियम की आयतों के संदर्भों को पढ़ें। उन आयतों की शिक्षा पर चर्चा करने के लिए तैयार रहें।
4. आयत 15 में इस्तेमाल हुए अलग-अलग शब्दों जैसे ''राजा,'' ''प्रधान'' आदि पर चर्चा करें।
5. क्या मनुष्य कभी परमेश्वर से छिप पाया है? लोग ऐसा करने की कोशिश क्यों करते हैं? क्या आपने अपने जीवन में कभी प्रभु से कुछ छिपाने की कोशिश की है?
6. क्या ''मेमना योग्य है'' वाक्यांश आपको अजीब लगता है? इस पाठ के लेखक को यह अजीब क्यों लगा?
7. आपको क्या लगता है कि विचाराधीन वचन पाठ रोमी साम्राज्य के विनाश की बात है या संसार के अन्त की? क्यों?
8. प्रकाशितवाक्य 6:12-17 जीवन के अर्थ को समझने में हमारी सहायता कैसे करता है?
9. पाठ के अनुसार वचन में महत्वपूर्ण प्रश्न क्या है?

10. अगले अध्याय के अनुसार परमेश्वर द्वारा अपना क्रोध उण्डेलने पर कौन खड़ा *रहेगा* (7:9) ?

मत्ती 24 और प्रकाशितवाक्य 6

टीकाकार यह ध्यान दिलाते हुए कि मत्ती 24 भी ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा,'' ''अकाल'' और मसीही लोगों पर होने वाले सताव (मत्ती 24:6, 7, 9) की बात करता है, मत्ती 24 को प्रकाशितवाक्य 6 के साथ ही रखते हैं। गलत अवधारणा से आरम्भ करने के बजाय कि मत्ती 24 (और मरकुस 13 और लूका 21 में इसके समानांतर पद) और प्रकाशितवाक्य 6 का मुख्य उद्देश्य द्वितीय आगमन के निकट होने के ''समयों के चिह्नों'' को बताना, नासमझी ही है।

मत्ती 24:3 में चेलों ने *दो* प्रश्न पूछे थे, जिनमें एक तो मन्दिर के विनाश के बारे में था और दूसरा संसार के अन्त के बारे में । मत्ती 24 का पहला भाग मुख्यतया यरूशलेम के विनाश के बारे में है (15 से 20 आयतों को देखें), जबकि इस अध्याय का पिछला भाग द्वितीय आगमन पर केंद्रित है। 6, 7 और 9 आयतें संसार के अन्त के बारे में नहीं बल्कि यरूशलेम के विनाश के बारे में हैं।[1]

लड़ाइयों, भूकम्पों और अकालों के यीशु के हवालों की व्याख्या उन चिह्नों के रूप में करना जिनसे यह पता चले कि द्वितीय आगमन निकट है, उसकी अपनी बातों में ही टकराव करना है। इसी अध्याय में द्वितीय आगमन की बात करते हुए उसने कहा, ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में *कोई नहीं जानता,* न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता'' (आयत 36)। उसने यह भी कहा कि ''जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी *नहीं* हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा'' (आयत 44ख)।

यीशु ने ज़ोर दिया कि उसके आने के समय जीवन *सामान्य* रूप में चल रहा होगा (आयतें 37-41)। ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा,'' अकाल, भूकम्प और झूठी शिक्षा देने वाले उसके आने के समय के स्पष्ट चिह्न नहीं हैं, बल्कि ये तो जीवन का भाग हैं अर्थात संसार में पाप के आने का परिणाम हैं।

टिप्पणी

[1]मत्ती 24:6 में यीशु के कहने का भाव था कि ''लड़ाइयां और लड़ाइयों की चर्चा'' और ऐसी बातें चिह्न कदापि *नहीं* थीं।

प्रकोप का भयानक दिन (6:12-17)